विषय : तबला - पखावज

महत्त्वपूर्ण सूचना :
प्रवेशिका प्रथम से विद्यार्थिओं को सभी वादन लहरा के साथ करना होगा। प्रवेशिका प्रथम से केवल क्रियात्मक के पाठयक्रम का पुनरावर्तन होगा। साध संगत के प्रत्र की परीक्षा प्रत्यक्ष रूप से किसी मागक या वादक के साथ अनिवार्य है।

प्रारंभिक
तबला पखावज

पूर्णांक : 50, न्यूनतम: 18
क्रियात्मक : 40 शास्त्र (मौखिक): 10

शास्त्र मौखिक रूप में:
१) निम्नलिखित शब्दों की परिभाषा
मात्रा, ताल, सम, ताली, खाली, विभाग, दुगुन, आवर्तन

क्रियात्मक :
१) अपने वाद्य पर बजने वाले सभी प्रमुख स्वतंत्र वर्णों के वादन विधि का समुचित ज्ञान।
२) अ) निम्नलिखित सभी तालों को ठाह तथा दुगुन मैं हाथ से ताली, खाली दिखाकर बोलने की तथा बजाने की क्षमता
१) तबला : त्रिताल, झपताल, दादरा तथा कहरवा
२) पखावज आदिताल, चौताल, तथा सूलताल ।
ब) रूपक / तीव्रा ताल को बराबर की लय में बोलने की तथा बजाने की क्षमता
३) निम्नलिखित तालों में विस्तार

तबला :
अ) त्रिताल :- एक 'तिट' का एवम 'तिरकिट' का कायदा, तीन पलटे तिहाई सहित
ब) त्रिताल और झपताल मे सम से सम तक न्यूनतम एक एक तिहाई

पखावज :
अ) चौताल में पालिट तथा धूमकिट बोलयुक्त रचना प्रकारों का बराबर की लय में वादन।

अंकपत्रिका :

सूचना : 1) इस परीक्षा के लिए हर एक विद्यार्थी को 10 मिनिट का समय निर्धारित किया गया है। तथा सभी कॉलम के अनुरूप प्रश्न पूछना अनिवार्य है।
२) पखावज के लिए अभ्यासक्रमानुसार पखावज के ताल पुछे जाएँगे।

क्र.	विषय	अंक
1	परिभाषा	10
2	वर्ण तथा तालों के ठेके एकगुन, दुगुन बजाना	10
3	तालों के ठेके हाथ पर ताल देकर पढ़ना	10
4	त्रिताल, झपताल में अभ्यासक्रम के अनुसार वादन	12
5	रूपक में अभ्यासक्रम के अनुसार वादन	3
6	सामान्य प्रभाव	5
	कुल	**50**

प्रवेशिका प्रथम वर्ष
तबला पखावज

पूर्णांक: 75, न्यूनतम : 26
क्रियात्मक : 60 मौखिक : 15

शास्त्र (मौखिक रूपमें) :

१) निम्नलिखित शब्दों की परिभाषा
संगीत, नाद, स्वर, लय, बोल, ठेका, किस्म, कायदा, मुखडा, तिहाई, तिगुन, चौगुन, तुकड़ा

२) रूपक / तीव्रा तथा एकताल / आदिताल को बराबर तथा दुगुन में हाथ से ताली खाली दिखाकर बोलने की क्षमता

३) तबला / पखावज तथा उसके विभिन्न अंगो का वर्णन

क्रियात्मक :

१) रूपक / तीव्रा तथा एकताल / आदिताल को बराबर तथा दुगुन में बजाने की क्षमता

२) निम्नलिखित तालों में विस्तार

तबला :

त्रिताल : दो किस्म, धाती का एक कायदा, तथा तीन पलटे, तिहाई सहित. दो मुखडे दो तुक

झपताल :'तिट' का एक कायदा तीन पलटे, तिहाई, एक किस्म, एक टुकड़ा और सम से सम तक दो
तिहाई

पखावज : चौताल तथा सूलताल में दो दो परने, एक रेला (4.4 पल्टों के साथ) तथा दो-दो समसे समतक तिहाइयाँ

अंकपत्रिका :

सूचना :

१) इस परीक्षा के लिए हर एक विद्यार्थी को 15 मिनिट का समय निर्धारित किया गया है।

२) इस परीक्षा से विद्यार्थियों को सभी बाद लहरा के साथ करना होगा।

३) पखावज के लिए पाठ्यक्रमानुसार पखावज के ताल पुछे जायेंगे ।

क्र.	विषय	अंक
1	पाठयक्रम के ठेकों को दुगुन में बजाना	10
2	परिभाषा, तालों के ठेके हाथ पर ताल देकर पढ़ना	10
3	दायें बायें का वर्णन	5
4	त्रिताल में वादन	25
5	झपताल में वादन	20
6	सामान्य प्रभाव	5
	कुल	**75**

प्रवेशिका द्वितीय वर्ष
तबला - पखावाज

पूर्णांक : 125, न्यूनतम: 44
शास्त्र : 50, न्यूनतम : 18
क्रियात्मक: 75, न्यूनतम : 26

शास्त्र :

१) विलंबित मध्य तथा द्रुतलय का ज्ञान|
२) तबला / पखावज के विभिन्न वर्ण और उन्हें अपने बाद्य पर निकालने की विधि:
   अ) केवल दाहिने हाथले बजने वाले वर्ण
   ब) केवल बाये हाथसे बजने वाले वर्ण
   क) दोनो हाथसे एक साथ बजने वाले वर्ण
३) निम्नलिखित बोलों की निकास विधि लिखिये :
   तिरकिट तकडा, कडधा, किटतक, धिडनग, धिरधिर त्रक, क्डधान, गदीगन
४) पं. भातखंडे तथा पं. पलुस्कर ताल लिपि पद्धतियों की संपूर्ण जानकारी|
५) निम्नलिखित तालों को दोनों ताल लिपि पद्धतियों में लिपिबद्ध करने का अभ्यास :
   तबला : त्रिताल, दादरा, कहरवा, झपताल, रूपक
   पखावज : चौताल, सूलताल, तीव्रा, धमार, तथा आदिताल
६) त्रिताल / चौताल तथा झपताल/सूलताल के टुकड़ों को पं. भातखंडे ताललिपि पद्धति में लिपिबद्ध करने का अभ्यास
७) निम्नलिखित शब्दों की परिभाषा:
   कायदा, रेला, पलटा, तिहाई, मुखडा, लगी, उठान, चक्रदार, मोहरा

क्रियात्मक :

१) निम्नलिखित तालों के ठेकों को हाथ से ताल देकर दुगुन लय में बोलने का तथा बजाने का अभ्यास:
   तबला : धुमाली, दिपचन्दी, चौताल, तेवरा.
   पखावज : धमार, तीव्रा, त्रिताल.
२) इस वर्ष के शास्त्र पक्ष में उल्लिखित सभी बोलों को भलीभाँति निकालने की क्षमता
३) निम्नलिखित तालो में विस्तार :-
(तबले के विद्यार्थी)
अ) त्रिताल : 'त्रक' तथा 'धातीपागे' का, एक-एक कायदा, चार पलटे, तिहाई एक रैला, चार किस्म एक
चक्रदार, दो टुकड़े,
ब) झपताल : एक कायदा, दो तिहाई, क) एकताल दो तिहाई, दो टुकडे,
ड) दादरा तथा कहरवा में दो सरल लगीयाँ
इ) रूपक : दो किस्म, दो तिहाई, दो टुकड़े
(पखावज के विद्यार्थी)
अ) चौताल : दो रेले, एक पडार, दो साधारण परने, दो चक्रदार परने तथा दो टुकड़े
ब) सूलताल : एक रेला, दो परने,
क) धमार : दो परने, दो तिहाईयाँ, दो टुकडे
ड) तीव्रा : ठेके के दो प्रकार, दो परन, दो तिहाईयाँ
४) तबला : छोटा ख्याल अथवा रजाखानी गत के साथ त्रिताल में संगत करने की क्षमता|

पखावज : धुपद के साथ संगत करने की क्षमता

५) क्रियात्मक में लिखित सभी रचना प्रकारों की हाथ से ताल देकर पढंत ।

अंकपत्रिका :

सूचना : १) इस परीक्षा के लिए हर एक विद्यार्थी को 20 मिनिट का समय निर्धारित किया गया है।
२) विद्यार्थी को सभी वादन लहरा के साथ करना होगा।
३) पखावज के लिए पाठ्यक्रमानुसार पखावज के ताल पूछे जाएंगे ।

क्र. सं.	**विषय**	**अंक**
1	तालों के ठेके तथा उनकी दुगुन बजाना	10
2	निकास	5
3	त्रिताल में वादन	20
4	झपताल, एकताल, रूपक मे वादन	15
5	दादरा तथा कहरवा में लगियाँ	5
6	साथसंगत (क्रियात्मक पाठ्यक्रम के अनुसार)	5
7	हाथ से ताल देते हुआ पढन्त	10
8	सामान्य प्रभाव	5
	कुल मौखिक	**75**

मध्यमा प्रथम वर्ष
तबला - पखावाज

पूर्णांक : 200, न्यूनतम : 70
क्रियात्मक :125 न्यूनतम :44,
शास्त्र : 75 न्यूनतम : 26

शास्त्र :

१) तबला / पखावज का संक्षिप्त इतिहास तथा उसका आधुनिक रूपने- परिवर्तन।
२) घराना तथा बाज की जानकारी देते हुने निम्नलिखित घरानों की सोदाहरण विस्तृत जानकारी।
तबला : (1) दिल्ली (2) लखनौ
पखावज : (1) पानसे (2) कुदाँहसिंह
३) निम्नलिखित गायन शैली तथा गायन प्रकारों की संक्षिप्त जानकारी
(1) ख्याल (विलंबित द्रुत) /धुपद (2) ठुमरी
(3) भजन (4) तराना
४) स्वतंत्र तबला वादन/पखावज वादन तथा साथ संगति की साधारण जानकारी
५) तबला / पखावज वादक के गुणदोष
६) निम्नलिखित शब्दों की परिभाषा :
फरमाईशी चक्रदार, तिहाई (बेदम दमदार), गत, पेशकार / परने तथा उसके विभिन्न प्रकार
७) तबला :- त्रिताल, झपताल तथा एकताल के कायदे तथा रेलों को लिपिबद्ध करना।
पखावज :- चौताल, सूलताल, तथा धमार के रेलों तथा परनों को लिपिबद्ध करना ।
८)
अ) अपने वाद्य को स्वर में मिलाने के नियम
आ) सभी संगीत प्रकारों की संगति के लिये प्रयोग में लिये जाने वाले विभिन्न स्वरों के तबलों की जानकारी
इ) पखावज के बाए पर आटा लगाने की विधि तथा कारण

क्रियात्मक :

१) निम्नलिखित तालों के ठेके :-
तबला : तिलवाडा, झपताल (विलंबित) अदा, आडाचौताल, खेमटा, सूलताल
पखावज : संभा, अपताल, बसंत, विक्रम (12 मात्रा) धुमाली
२) निम्नलिखित तालों की उपयोगिता विभिन्न संगीत प्रकारों में स्पष्ट करें
एकताल, त्रिताल, दादरा, चौताल, धमार
३) तबला : अ) विलंबित त्रिताल तथा झपताल में मुखड़े बजाना
ब) कहरवा दादरा में लग्गी लगाना और तिहाई लेकर ठेका पकड़ना ।
पखावज : अ) चौताल तथा धमार में उठान बजाना।
ब) घुमाली, दादरा में लग्गी लगाना और तिहाई लेकर ठेका पकड़ना ।
४) निम्नलिखित तालों में विस्तार : (तबले के विद्यार्थी)
त्रिताल : अ) एक चतस्त्र तथा एक तिस्र जाती का कायदा चार पलटें तिहाई सहित,
ब) "धिरधिर' का रेला तीन पलटों के साथ एक गत एक फरमाईशी चक्रदार, टुकड़े
क) 1, 5, 9, 13, मात्राओंसे तिहाई लेकर सम पर आने का अभ्यास
झपताल: दो कायदे, एक रेला, तीन टुकड़े, तीन तिहाई (सम से सम तक) दो मुखड़े, एक चक्रदार सहित 15 मिनिट बजाने की क्षमता।

(पखावज के विद्यार्थी)

अ) चौताल तथा धमार में एक चतुस, एक तिस जाति का रेला चार पलटों तथा तिहाई के साथ

ब) "धिरधिर" का रेला तीन पल्टों के साथ, एक गत, एक फरमाईशी चक्रदार, टुकड़े

क) विभिन्न मात्राओं से तिहाई लेकर सम पर आने का अभ्यास

५) निम्नलिखित बोलों को बजाने की क्षमता

(तबले के विद्यार्थी)

१) धिरधिर किटतक तकीट घाइ
२) धात्रक चिकिट कतगदिगन
३) दिगदिनागीना (न्)
४) तक दिन तक्

(पखावज के विद्यार्थी)

१) धेतधिननक, धेतधिननक, धिननक
२) धुमकिट धुमकिट तकिटतकाईकिट
३) तकिट तका तिटकतगदिगन ता था

६) निम्नलिखित तालों को हाथ से ताल देकर तिगुन लय में बोलने की क्षमता

तबला :- त्रिताल, झपताल, एकताल, रूपक तथा चौताल

पखावज :- - चौताल, धमार, सूलताल, तीव्रा तथा त्रिताल

७) त्रिताल मे गत तथा फरमाईशी चक्रदार को हाथ से ताल देकर बोलने की क्षमता।

अंकपत्रिका :

सूचना : १) इस परीक्षा के लिए हर एक विद्यार्थी को 35 मिनिट का समय निर्धारित किया गया है।
२) विद्यार्थी को सभी वादन लहरा के साथ करना होगा।
३) पखावज के लिए पाठ्यक्रमानुसार पखावज के ताल पूछे जाएँगे ।

क्रमांक	**कार्य**	**अंक**
1	तालों के ठेके तथा उनकी दुगुन बजाना	10
2	विलंबित तालों के मुखडे बजाना	10
3	त्रिताल में विस्तार वादन (पाठ्यक्रमानुसार)	40
4	झपताल में वादन (पाठ्यक्रमानुसार)	30
5	दादरा, कहरवा में लगियाँ	5
6	गत और फरमाईशी चक्रदार की पदंत	5
7	पाठ्यक्रम में दिए गए तालों को हाथ से तिगुन लय में बोलने का अभ्यास	10
8	निकास तथा तैय्यारी	10
9	सामान्य प्रभाव	5
	कुल मौखिक	125

मध्यमा द्वितीय वर्ष
तबला - पखावाज

पूर्णांक : 250, न्यूनतम : 88
क्रियात्मक : 130 न्यूनतम :53
शाखा : 100, न्यूनतम : 35

शास्त्र :

१) गायकी की विभिन्न शैलियों : धृपद धमार, गझल, टप्पा
२) तबला / पखावज का इतिहास प्राचीन काल से आधुनिक काल तक परिवर्तन तथा विकास
३) तबला / पखावज के सभी घराने तथा उनके बाज की जानकारी
४) गायन वादन तथा नृत्य की संगत तथा उनके नियमों की जानकारी
५) तबला - त्रिताल, झपताल तथा रूपक ताल को आड, कुआड तथा बिआड में लिपिबद्ध करने की क्षमता
पखावज - चौताल, सूलताल, तथा धमार
६) निम्नलिखित शब्दों की परिभाषा : आमद, त्रिपल्ली, चौपल्ली, गत कायदा, कमाली चक्रदार
७) निम्नलिखित वादकों का जीवन परिचय तथा उनका सांगीतिक योगदान
उ. अहमदजान थिरकवा, उ. अमीर हुसेन खाँ साहेब, उ. अल्लारखाँ, उहबीबुद्दीन खाँ, पं. सामताप्रसाद, उ.आफाक हुसैन, स्वामी पागलदासजी राजा छत्रपती सिंह
८) ताल तथा तबला / पखावज संबंधी विषयों पर निबंध
९) निम्नलिखित संकल्पनाओं का तुलनात्मक अध्ययन :-
तबला :- पेशकार कायदा- रेला
पखावज : साथपरन,- गत परन - बोलपरन

क्रियात्मक :

१) निम्नलिखित तालों के ठेके ताली देकर दुगुना सहित बोलना तथा बजाना
तबला :- झूमरा, पंजाबी, धमार
पखावज :- गजझंपा, मत्त, रूद्र
२) तबला - ताल एकताल और त्रिताल में बहे ख्याल के साथ संगत - करने की क्षमता
पखावज - धूपद, धमार तथा सादरा के साथ संगत करने की क्षमता
३) उपरोक्त तालों की साथ संगत में विलंबित लय में उनमे मुखडे लगा कर सम पर आने का अभ्यास
४) तबला / पखावज को उचित ढंग से स्वर मे मिलाने का अभ्यास
५) निम्नलिखित तालो में विस्तार
(तबला के विद्यार्थी) :-
अ) त्रिताल पेशकार, तिस्र, चतुस्र जाति के कायदे, तिरकिट, धिरधिर, दिनतक के रेले, गत, चक्रदार टुकडे आदि बजाकर 20 मिनिट तक स्वतंत्र वादन करने की क्षमता
आ) रूपक, झपताल तथा एकताल इन तालों में तैयारी के साथ कायदे, रेले, टुकड़े (न्यूनतम 2-2 प्रकार) आदि बजाने की क्षमता
इ) त्रिताल का ठेका द्रुतलय में बजाने की क्षमता
(पखावज के विद्यार्थी) :-
अ) चौताल में 20 मिनिट का स्वतंत्र एकल वादन (संपूर्ण अंग से)

आ) तीव्रा, सूलताल, तथा धमार, इन तालों में तैयारी के साथ 10 मिनिट का एकल वादन
इ) चौताल / धमार का ठेका द्रुतलय बजाने की क्षमता

अंकपत्रिका :

सूचना : १) इस परीक्षा के लिए हर एक विद्यार्थी को 35 मिनिट का समय निर्धारित किया गया है।
२) विद्यार्थी को सभी वादन लहरा के साथ करना होगा।
३) पखावज के लिए पाठ्यक्रमानुसार पखावज के ताल पूछे जाएँगे ।

क्रमांक	**कार्य**	**अंक**
1	तालों के ठेके तथा उनकी दुगुन बजाना	10
2	साथ संगत	15
3	विलंबित लय के तालों में मुखडा लगाकर समपर आना	10
4	वाद्य स्वर में मिलाना	5
5	त्रिताल में वादन (पाठ्यक्रमानुसार)	50
6	रूपक, झपताल तथा एकताल में अभ्यासक्रम के अनुसार वादन (सभी तालों को समान अंक)	45
7	त्रिताल का ठेका द्रुतलय में बजाना	5
8	निकास तथा तैयारी	5
9	सामान्य प्रभाव	5
	कुल मौखिक	**150**

विशारद प्रथम वर्ष
तबला - पखावज

(पूर्णांक 400, न्यूनतम 180)
क्रियात्मक : 250 (मौखिक: 200 मंच प्रदर्शन: 50)
न्यूनतम : 128
शास्त्र : 150, न्यूनतम : 52 : (26+26)

प्रथम प्रश्नपत्र

शास्त्र : -

१) ताल और ठेके में अंतर, ताल की विस्तृत परिभाषा।
सम, ताली, खाली, खंड / विभाग की जानकारी।
२) त्रिताल और झपताल में टुकड़ों को ठाह और दुगुन में लिपिबद्ध करने का अभ्यास
३) निम्नलिखित की सोदाहरण परिभाषा।
आमद, पेशकार, कायदा, रेला, चलन, गतपरन, मुखड़ा, मोहरा.
४) समान मात्रा संख्या के विभिन्न तालों का तुलनात्मक अध्ययन :-
a. दीपचंदी- झूमरा, आड़ा चौताल - धमार
b. रूपक तेवरा (तिव्रा) - पश्तो -
c. त्रिताल, तिलवाड़ा, अध्धा पंजाबी। -
५) लय और लयकारी के परस्पर संबंध की जानकारी तथा व्याख्या ।
६) भारतीय संगीत वाद्यों के वर्गीकरण का सिद्धांत। जानकारी।

द्वितीय प्रश्नपत्र

१) तबला अथवा पखावज वाद्य की उत्पत्ति एवम् विकास का संक्षिप्त अध्ययन।
२) तबला वादन में प्रयुक्त विभिन्न बाज : विशेषता और तुलना
३) तबला अथवा पखावज के घराने और उनकी वादन विशेषता तथा किसी एक घराने की संपूर्ण जानकारी।
तबला - दिल्ली, लखनौ तथा पंजाब
पखावज - कुदऊसिंह, नाना पानसे, तथा नाथद्वार
४)
i) पेशकार, कायदा, रेला तथा गत का तबला एकल वादन में स्थान एवम् महत्त्व ।
ii) रेला, चक्रधार परन, स्तुतिपरन, बोलबाट, आदेशी परन का पखावज वादन में स्थान एवम महत्त्व ।

५) निम्नलिखित तालों में से प्रत्येक में दो दमदार एवम् दो बेदम तिहाइयाँ ताललिपि में लिखना :-
तबला- त्रिताल, झपताल, आड़ाचौताल.
पखावज - तेवरा, सूलताल, आदिताल
६) तबला / पखावज तथा बाँयें के वादन में संतुलन बनाने के लिये आवश्यक रियाज की पद्धति ।
७) निम्नलिखित तबला वादकों का जीवन परिचय तथा सांगीतिक योगदान :-
उ. सलारीखाँ, उ. मुनीरखाँ, पं. कंठेमहाराज, उ. गामेखाँ, उ. करामतुल्लाखाँ,

उ. इनाम अली खाँ, पं. पुरूषोत्तम दास पखावजी, पं. माधवराव अलगुटकर, पं. सखारामजी गुरव.

क्रियात्मक :

१) तबला / पखावज सुर में मिलाने का अभ्यास तथा हार्मोनियम पर विविध स्वरों के मध्यम एवम पंचम स्वरों को पहचानने की क्षमता।
२) रूपक, एकताल, सूलताल, चौताल, त्रिताल और झपताल इन तालों के ठेकों की दुगुन, तिगुन तथा चौगुन हाथ से ताली देकर पढ़ना तथा बजाना।
३) (त्रिताल में निम्नलिखित का वादन) :-
धा) "तिट" शब्द युक्त दो कायदे (एक तिस्र तथा एक चतुस्र) चार पल्टे तथा तिहाई ।
त्र) दो कायदे जिनमें "तिरकीट" शब्द का प्रयोग हुआ हो, चार पल्टे तथा तिहाई ।
क) धिं (दिं) तिरकीटतक शब्द समूह युक्त एक रेला, चार पल्टे एवम तिहाई ।
धि) धिरधिर बोल समूह युक्त एक रेला, चार पल्टे तथा तिहाई !
कि) न्यूनतम पाँच बंदिशे (गत टुकड़े)।
ट) दो दमदार तथा बेदम तिहाई
(पखावज में निम्नलिखित वादन)

i. चौताल, धमार, तथा आदिताल में निम्नानुसार वादन पडार, तिस्त्र तथा चतुस्त्र जाति के रेले, स्तुतिपरन, गतपरन, तथा ताल परन का वादन, फरमाईशी चक्रदार परने तथा नौहका तिहाईयाँ..

४) निम्नलिखित शब्द एवम शब्द समूहों के रियाज की पद्धति -- धातिरकिटतक तिरकिट, धाति, धागेतिट, धिरधिर, चिनगिन, गदिगन, धुमकिट, धिटधिट धागेतिट, धेत् तगिन्न
५) दादरा तथा केहरवा ताल में कलापूर्ण लग्गियों का प्रदर्शन।
६) तबला - झपताल और सवारी ताल (15 मात्रा) में से प्रत्येक में दो कायदे (एक तिस्र तथा एक चतुस पल्टों सहित), एक रेला, दो दमदार तिहाई, और चार टुकड़े।
पखावज - रूद्र तथा गजझंपा मे रेले, टुकड़े, परने, तिहाईयाँ बजाने का अभ्यास
७) गायन-वादन की साथसंगत।
८) अब तक के अभ्यासक्रम में आए हुए तालों में विभिन्न मात्राओं की दमदार तथा बेदम तिहाईयाँ |
९) विधिवत 30 मिनिट का मंच प्रदर्शन

अंकपत्रिका :

सूचना :

१) इस परीक्षा के लिए हर एक विद्यार्थी को 50 मिनिट का समय निर्धारित किया गया है।
२) विद्यार्थी को सभी वादन लहरा के साथ करना होगा।
३) पखावज के लिए पाठ्यक्रमानुसार पखावज के ताल पूछे जाएँगे।
४) मंच प्रदर्शन नियंत्रिकों के सम्मुख स्वतंत्र रूपसे होगा, जिसके लिए अतिरिक्त समय तथा 50 अंक निर्धारित किये गये है।

क्रमांक	कार्य	अंक
1	तबले को स्वर में मिलाने का अभ्यास तथा हार्मोनियम पर विविध स्वरों को बजाकर उनके मध्यम तथा पंचम स्वरों को पहचानना	10
2	रूपक, एकताल, सूलताल, चौताल, त्रिताल, और झपताल के ठेकों को हाथ से ताली देकर दुगुन, तिगुन तथा चौगुन में पढ़ना तथा बजाना	15

3	त्रिताल में इस वर्ष के पाठ्यक्रमानुसार वादन	50
4	पाठ्यक्रम में दिए गए शब्द समूहों के रियाज की पद्धति का प्रदर्शन	15
5	दादरा तथा कहरवा में कलापूर्ण लगियाँ	10
6	झपताल में एक कायदा, एक रेला, चार टुकड़े और दो तिहाईयाँ	30
7	सवारी में एक कायदा, एक रेला, चार टुकड़े और दो तिहाईयाँ	30
8	विभिन्न मात्रा के तालों में तिहाईयाँ	10
9	गायन / वादन की साथ संगत	20
10	सामान्य प्रभाव	10
	कुल मौखिक	200

मंच प्रदर्शन	**अंक**
1) त्रिताल में सम्पूर्ण एकल वादन	30 अंक
2) झपताल अथवा सवारी में एकल वादन	20 अंक
कुल अंक	**50 अंक**

विशारद द्वितीय
तबला पखावज

पूर्णांक : 400, न्यूनतम : 180
क्रियात्मक : 250, (मौखिक 200 + मंचप्रदर्शन: 50) न्यूनतम 128
शास्त्र 150 न्यूनतम 52 (26+26)

प्रथम प्रश्न-पत्र

शास्त्र :-

१) पं. भातखंडे एवम् पं. पलुस्कर ताललिपि पद्धतियों का विस्तृत अध्ययन।
२) ताल के दश प्राणों का संक्षिप्त अध्ययन तथा क्रिया, अंग, जाति तथा यति का विस्तृत अध्ययन।
३) कर्नाटक एवम् उत्तर भारतीय ताल पद्धति का अध्ययन।
४) भारतीय संगीत में प्रचलित अवनद्ध वाद्यों की पाश्चात्य अवनद्ध वाद्यों के साथ तुलना ।
५) लय तथा लयकारी के अंतर का ज्ञान तथा निम्नलिखित तालों में आड, कुआड और बिआड़ लयकारी की बंदिशों को सम से समतक ताललिपि में लिखना।
(1)त्रिताल (2) झपताल (3) धमार (4) सूलताल
६) निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों की उदाहरण सहित व्याख्या:
उठान, त्रिपल्ली एवम् चौपल्ली गत, फरमाईशी गत, फरमाईशी चक्रदार, कमाली चक्रदार, रौ, लग्गी, लडी तथा किस्म ।
७) भारतीय शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, लोकसंगीत में प्रयुक्त होने वाले निम्नलिखित वाद्यों का विवरण :
तानपुरा, हारमोनियम, पखावज, मृदंगम, ढोलक, ढोलकी (नाल)
खोल, संबल, गुटुम, एकतारा, तविल, शहनाई।

द्वितीय प्रश्न-पत्र

१) तबला / पखावज वाद्य का भारतीय संगीत में स्थान महत्त्व एवम उपयोगिता तथा तबला / पखावज की उत्पत्ति के संबंध में प्रचलित विभिन्न मतों की समीक्षा
धा) पेशकार, कायदा, रेला एवम् गत इन वादन प्रकारों के रचना सिद्धांत।
धी) ठेका, प्रस्तार, रेला, एवं गत परन इन वादन प्रकारों के रचना सिद्धांत।

२) तबला तथा पखावज वादन में प्रयुक्त होने वाले वर्णों के निकास की विस्तृत जानकारी ।
३) शास्त्रीय, उपशास्त्रीय और सुगम संगीत के साथ तबला / पखावज की संगति के सिद्धांतो का अध्ययन ।
४) पखावज के विभिन्न घरानों की जानकारी ।
५) अजराडा, फरुखाबाद एवम् बनारस घरानों की वादन विशेषतायें ।
६) एकल तबला वादन: -
अ) वादन प्रकारों की प्रस्तुति का क्रम,
ब) प्रभाव कारक प्रस्तुतिकरण के गुणतत्त्व,
क) पढंत की आवश्यकता ।
७) ताल निर्माण के नियम ।
८) निम्नलिखित वादकों का जीवन परिचय तथा सांगीतिक योगदान।

उ. नत्थुखाँसाहब, उ. शम्भु खाँ, उ. वाजीद हुसेन, उ. आबीद
हुसेन, उ. चुडीया ईमाम बक्ष, पं. गोविंदराव बन्हाणपूरकर, पं. पर्वतसिंह, पं. अयोध्याप्रसाद ।

क्रियात्मक :

(तबला के विद्यार्थी) :-

१) त्रिताल में निम्नानुसार वादन
   अ) दिल्ली अथवा फरूखाबाद घराने का पेशकार विस्तार पूर्वक बजाना।
   आ) 'त्रक' शब्द युक्त चतुस एवम त्रिय जाति के एक-एक कायदे को छह पलटे तथा तिहाई सहित बजाना।
   इ) 'धातंग घेतग' इस शब्द समूह युक्त त्रिय जाति के एक कायदे का, छह पलटे तथा तिहाई सहित वादन ।
   ई) 'ती' अथवा 'गेगेनागे' शब्द युक्त कायदा, छह पलटे तिहाई सहित बजाना ।

(पखावज के विद्यार्थी) :-

   अ) चौताल, धमार, सूलताल, तीव्रा, अदिताल में कुदकसिंह, तथा नाना पानसे घराने की 2-2 बंदिशों की पढंत एवं वादन।
   आ) उपर्युक्त मे से किन्ही दो वालों में धिरधिर एवं चिकना रेले, पल्टे का अपेक्षित तैय्यारीके साथ वादन ।
   इ) उपर्युक्त तालों में एक एक कमाली चक्रदार परन का वादन
   ई) आदिताल तथा धमार मे दो दो बेदम तिहाईयाँ तथा 1½- मात्रा के दमयुक्त सम संख्या तक का वादन ।

२) रेला :-
   अ) 'धिरधिर' शब्द युक्त रेले का पाच पलटों एवम् तिहाई सहित अपेक्षित तैयारी में वादन ।
   ब) 'दिंगनग' शब्द समुह युक्त पाच पलटे, तिहाई सहित वादन ।

३) गत :-
   दो शुद्ध गते (तिहाई सहित), दो चक्रदार गतें तथा दो त्रिपल्ली गतों का पढ़त के साथ वादन

४) तिहाई :-
   दो बेदम तथा दो 1-1/2 मात्राओं के दमयुक्त सम से सम युक्त वादन

५) निम्नलिखित तालों की दुगुन तिगुन व चौगुन हाथ से ताल देकर पढ़ना तथा बजाना :-
   एकताल झूमरा, सूलताल, धमार..

६) निम्नलिखित तालों में से किसी एक ताल में 10 मिनीट का एकल वादन (परीक्षक के निर्देशानुसार वादन की प्रस्तुति करना) मत्ततात, रूद्रताल, आडाचौताल

७) तबला / पखावज सुर में मिलाना, बाद मे आधा सुर चढ़ाना या उतारकर मिलाना।

मंचप्रदर्शन :-

१) विद्यार्थी के इच्छानुसार 30 मिनिट तक स्वतंत्र तबला/पखावज वादन करने की क्षमता ।
२) दीपचन्दी, कहरवा अथवा दादरा ताल में सुंदर लगियाँ ।

अंकपत्रिका :

सूचना :-

१) इस परीक्षा के लिए हर एक विद्यार्थी को 60 मिनिट का समय निर्धारित किया गया है।
२) विद्यार्थी सभी वादन लहरा के साथ साथ करना होगा।
३) पखावज के लिए पाठ्यक्रमानुसार पखावज के ताॅल पूछे जाएँगे।
४) मंच प्रदर्शन निमंत्रितों के सम्मुख स्वतंत्र रूपसे होगा, जिसके लिए अतिरिक्त समय तथा 50 अंक निर्धारित किये गये हैं।

क्र.सं.	विवरण	अंक
1	त्रिताल मे इस वर्ष के पाठ्यक्रमानुसार वादन करने की क्षमता	55
2	धिरधिर एवं "दिंगनग" इन शब्द समूहों से युक्त रेले का पल्टों एवं तिहाई सहित वादन	20
3	दो शुद्ध, दो चक्रदार तथा दो त्रिपल्ली गतों का पढ़त के साथ वादन	30
4	दो बेदम तथा दो 14 (डेढ़भाग) मात्रा की दम युक्त सम से सम तक तिहाई बजाने का अभ्यास	15
5	पिछले पाठ्यक्रम के तालों के अतिरिक्त एकताल, झूमरा, सूलताल तथा धमार ताल की दुगुन, तिगुन एवं चौगुन हाथ से ताली देकर पढ़ना तथा बजाना	15
6	किसी एक ताल में परीक्षक के निर्देशानुसार एकल वादन: मत्तताल (9), रुद्रताल (11), आड़ा चौताल (14)	40
7	साथ संगत का अभ्यास	15
8	वाद्य को स्वर में मिलाना	10
	कुल मौखिक	**200**

क्र.सं.	मंच प्रदर्शन	अंक
1	किसी ताल में 30 मिनिट का स्वतंत्र तबला वादन	35 अंक
2	दीपचन्दी, कहरवा तथा दादरा में कलात्मक लग्गियाँ	15 अंक
	कुल	**50 अंक**

अलंकार प्रथम वर्ष
तबला पखावज

पूर्णांक : 500 न्यूनतम : 225
क्रियात्मक: 300 (मौखिक 200 + मंचप्रदर्शन : 100) न्यूनतम 155
शास्त्र 200 न्यूनतम 70 (35+35)

प्रथम प्रश्न पत्र

पूर्णांक: 100, न्यूनतम 35

१) ध्वनि का वैज्ञानिक अध्ययन नाद का ऊंचा नीचापन, बड़ा-छोटापन - तथा गुणधर्म का विवेचन ।
२) भरत नाट्यशास्त्र के तालाध्याय का संक्षिप्त अध्ययन तथा "मार्ग ताल" पद्धति का विस्तृत अध्ययन। एककल, द्विकल, चतुष्कल, कला, मात्रा, आदि की जानकारी ।
३) ताल के दश प्राणों का विस्तृत अध्ययन । वर्तमान ताल पद्धति में उनकी उपयोगिता और महत्त्वपूर्ण एवम् तर्कपूर्ण विचार।
४) तबला / पखावज वाद्यों का इतिहास तथा इन वाद्यों की वादन पद्धति के विकास के लिये विद्वान कलाकारों द्वारा किये गये कार्य की जानकारी ।
५) भारतीय तथा पाश्चात्य अवनद्ध वाद्यों की बनावट के आधार पर तुलना ।
६) तिहाई और चक्रदार का अंतर्निहित संबंध तथा तुलनात्मक ज्ञान । तिहाई तथा चक्रदार गणितीय सिद्धातों का विवेचन।
७) घन तथा अवनद्ध वाद्यों का परस्पर सम्बन्ध तथा प्रमुख घन एवम् अवनद्ध वाद्यों की सचित्र जानकारी।

द्वितीय प्रश्न पत्र

पूर्णांक : 100 न्यूनतम : 35

१) तबला / पखावज की बंदिशो की भाषा के उद्गम और विकास की जानकारी तथा इस भाषा से निर्मित साहित्य का ज्ञान।
२) "तबला / पखावज वादन (एकल तथा संगति) के सौन्दर्यतत्त्वों का विश्लेषणात्मक अध्ययन ।
३) तबला / पखावज वादन में प्रयुक्त होनेवाले विभिन्न वर्ण तथा उनके संयोजन से बनने वाले शब्द, शब्दसमूहों के निकास की जानकारी, पदंत और निकास में अंतर की जानकारी तथा कारण।
४) घरानेदार बंदिशों की सोदाहरण जानकारी तथा उनकी विशेषताओं का अध्ययन।
५) ध्रुपद, धमार, ख्याल, ठुमरी, टप्पा आदि गान-विधाओं तथा मसीत खानी और रजाखानी गत आदि की ऐतिहासिक जानकारी तथा इनके साथ तबला / पखावज की संगति पर दिवेचनात्मक अध्ययन ।
६) तबला / पखावज वादन के रियाज की विभिन्न पद्धतियां तथा आपके विचार ।
७) निम्नलिखित तबला / पखावज वादकों का जीवन परिचय एवं योगदान :- उ, बोली बख्श, उ. जहांगीर खांन, उ शेख दाऊद, मेहबूब खां मिरजकर, पं. कुदऊ सिंह, पं.नाना पानसे, पं. चतुरलाल, पं. भवानीदास ।

अलंकार प्रथम वर्ष (क्रियात्मक)

पूर्णांक: 300, (कियात्मक : 200 + मंच प्रदर्शन 100) न्यूनतम 155

(तबले के विद्यार्थी के लिए)

१) त्रिताल :अ) घरानेदार पेशकार का प्रस्तुतिकरण ।
ब) त्रिस तथा मिस्र जाति का एक एक कायदा तथा न्यूनतम छह पलटों सहित।
क) तिस्र जाति का एक रेला न्यूनतम छह पल्टों सहित।
ड) धिरधिर धिर, दिनगिन अथवा तकतिर कीटक शब्द युक्त रेलों का प्रस्तुतिकरण ।
ई) चलन बजाकर उसकी 'रौ' का प्रस्तुत करना।
स) न्यूनतम चार (विभिन्न प्रकार की) गतों का वादन ।
ह) विभिन्न मात्रा से प्रारंभ होने वाली तिहाईयों का अभ्यास।

२) अन्य ताल :
निम्नलिखित तालों मे से किसी एक ताल में परीक्षक के निर्देशानुसार न्यूनतम दस मिनिट का स्वतंत्र वादन प्रस्तुत करने की क्षमता :
1) आड़ाचौताल 2) पंचम सवारी 3) रूद्र (11 मात्रा)

३) त्रिताल, एकताल तथा रूपक तालों के ठेके, विलंबित लय में ठेका भरी के साथ बजाने की क्षमता तथा मुखड़े बजाकर सम पर आना। (बड़े मुह (6 से 7 इंच तक) के तबले पर बजाने का अभ्यास आवश्यक ।)
४) दादरा, केहरवा तथा चाचर तालों में कलापूर्ण लग्गियों का वादन।
५) (अ) स्वर पहचानना (ब) तबला स्वर में मिलाना
६) वादन में स्वरमयता तथा विभिन्न लयकारी

मंच प्रदर्शन :

त्रिताल न्यूनतम ३० मिनिट संपूर्ण स्वतंत्र वादन।
रूपक, झपताल एकताल तथा जयताल में से किसी एक ताल में पेशकार कायदे, रेले, गत टुकड़े तथा चक्रदार सहित २० मिनिट स्वतंत्र वादन ।

अलंकार प्रथम वर्ष- तबला

अंकपत्रिका :

क्र. सं.	विषय	अंक
1	त्रिताल में पाठ्यक्रमानुसार वादन	80
2	निम्नलिखित तालों में से किसी एक ताल में परीक्षक के निर्देशानुसार न्यूनतम 10 मिनिट का स्वतंत्र वादन	40
	1) आडा चौताल, 2) पंचमसवारी, 3) रुद्र (11 मात्रा)	
3	त्रिताल, एकताल तथा रूपक तालों के ठेके विलंबित लय में "ठेका भरी" के साथ बजाने की क्षमता तथा मुखड़े बजाकर समपर आना	20
4	दादरा, कहरवा तथा चाचर तालों में कलापूर्ण लग्गियों का वादन	15
5	अ) स्वर पहचानना ब) तबला स्वर में मिलाना	15
6	परीक्षक द्वारा पूछे गये बुद्धिनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर देना (तिहाईयाँ बनाना दिये गये बोलों के आधारपर रचना करके सुनाना आदि)	20
7	विभिन्न लयकारियों की पढ़ंत एवं बजाना	10
	कुल अंक	**200**

मंच प्रदर्शन :

(आमंत्रित श्रोताओं के सम्मुख)

क्र.	मंच प्रदर्शन	अंक
1	त्रिताल में न्यूनतम 30 मिनिट का संपूर्ण वादन	50
2	रूपक, झपताल, एकताल तथा जयताल में से किसी एक ताल में पेशकार, कायदे, रेले, गत - टुकड़े तथा चक्रदार सहित न्यूनतम 20 मिनिट का स्वतंत्र वादन	50
	कुल	**100**

अलंकार प्रथम वर्ष (पखावज)

(पखावज के विद्यार्थी के लिये)

क्रियात्मक :

१) चौताल, धमार, सूलताल और तीव्रा इन तालों में विस्तृत एकल वादन करने का अभ्यास (पानसे घराने की साथ परनें, विभिन्न गत-परनें, रेले बजाने की क्षमता अपेक्षित है।
२) उपर्युक्त सभी तालों में आइ तथा बिआइ लय में परनें।
३) उपर्युक्त तालों के ठेके दुगुन, तिगुन, तथा चौगुन में बजाना, एवं हाथ से ताली देकर पढ़ंत करना।
४) उपर्युक्त तालों में से किसी एक ताल में एक -गज परन तथा एक गणेश परन पढंत करके बजाना।
५) कुदऊसिंह घराने की गत-परनें, चक्रदार परने तथा साथ परनें बजाने का अभ्यास ।
६) उपर्युक्त तालों में दमदार तिहाईयाँ बजाना तथा किन्ही दो तालों में बेदम तिहाईयाँ (सम से सम) पढ़ंत करना एवं बजाना ।

अंकपत्रिका

क्र. सं.	**विवरण**	**अंक**
1	विस्तृत वादन चौताल, धमार, तीव्रा, सुलताल	80
2	आड-बिआड लय में परन	20
3	दुगुन, तिगुन, चौगुन में हाथ से ताल देकर ठेके पढ़ना एवं बजाना	20
4	गजपरन, एवं गणेश परन	20
5	कुदाऊसिंग घराने की विभिन्न रचनाएँ	40
6	दमदार तथा बेदम तिहाइयाँ	20
	कुल मौखिक	**200**

क्र. सं.	**मंच प्रदर्शन**	**अंक**
1	चौताल में एकल वादन 30 मिनिट	60
2	सूल अथवा तीव्रा ताल में वादन	40
	कुल अंक	**100**

अलंकार द्वितीय वर्ष
तबला पखावज

पूर्णांक: 500 न्यूनतम : 225
क्रियात्मक 300 (मौखिक 200 + मंचप्रदर्शन: 100)
न्यूनतम :155
शास्त्र 200 न्यूनतम 70 (35+35)

प्रथम प्रश्न प्रत्र

पूर्णांक 100 न्यूनतम 35

१) तबला/पखावज वादन कला के अध्यापन का ऐतिहासिक अध्ययन|
२) तबला/पखावज वादन कला के अध्यापन की विविध पद्धतियोंका पारस्परिक तुलनात्मक अध्ययन ।
३) उत्तर भारतीय तथा दक्षिण भारतीय शास्त्रीय एवम् में प्रयुक्त होने वाले ताल वाद्यों की सचित्र जानकारी| संगीत रत्नाकर के तालाध्याय का गहन अध्ययन तथा प्राचीन एवम् मध्ययुगीन ताल पद्धति की तुलना ।
४) लय एवम् लयकारी का विस्तृत अध्ययन| निम्नलिखित तालों को पौनगुन, सवागुन, डेढगुन तथा पौनेदोगुन में लिपिबद्ध करने का अभ्यास । त्रिताल, आडाचौताल, धमार, सवारी, जयताल, रूद्र
५) तबला / पखावज वादन की रचनाओं में शब्दालंकार, छंदवृत्त, गणवृत्त, और काव्य सौंदर्य की जानकारी|
६) निम्नलिखित विषयों पर निबंध लिखना :-
   (क) तबला तथा पखावज वादन में प्रयुक्त होने वाली बंदिशों का निकास क्या वर्तमान ताल लिपि पद्धतियों द्वारा समझना संभव है ? आपके विचार लिखिये|
   (ख) समान मात्रा के विभिन्न तालों के औचित्य तथा उपयोगिता पर आपके विचार ।
   (ग) भारतीय संगीत के प्रत्येक विद्यार्थी के लिये क्या तबला / पखावज का शिक्षण आवश्यक होना चाहिये ?
   (घ) विभिन्न लयकारियों तथा लयों के अध्यापन की विभिन्न पद्धतियाँ|
   (ङ) क्या वैज्ञानिक उपकरण शास्त्रीय संगीत के शिक्षण में उपयोगी है ?
   (च) तबला / पखावज वादकों के गुण दोषों का विवेचन ।
   (छ) तबला / पखावज के वादन में नजाकत और वजनदारी का महत्त्व
७) 'उपज' की परिभाषा तथा उसकी स्वतंत्र वादन तथा साथ संगति में उपयोगिता तथा महत्त्व ।

द्वितीय प्रश्न पत्र

पूर्णांक : 100, न्यूनतम 35

१) स्वतंत्र तबला / पखावज वादन में प्रयुक्त साहित्य भाषा एवं वादन त्रकारों के विशेषताओं की जानकारी।
२) साथ संगति की शिक्षण पद्धति ।
३) अवनद्ध वाद्यों का विकास और सौन्दर्यात्मक विविध नादनिर्मितिमें उनकी बनावट का योगदान।
४) संगीत से रस निष्पत्ति तथा लय एवम् रस का संबंध ।
५) विविध घरानेदार बंदिशों के रचनात्मक सौंदर्य का सोदाहरण विवेचन।
६) स्वतंत्रता पूर्व तथा साथसंगत विधि का तुलनात्मक अध्ययन ।
७) तबला/पखावज की बंदिशों की सोदाहरण व्याख्या ।
८) निम्नलिखित वादक कलाकारों के जीवन परिचय एवम् योगदान की जानकारी।
९) उ. सिद्धार खाँ, उ. कल्लू खाँ, उ. मीसखों, उ. बक्षूखाँ, उ. मोदुखों, उ हाजी बिलायत अली, पं. रामसहाय, पं. जानकी प्रसाद, पं. अंबादासपंत आगले, पं. दत्तोपंत मंगळवेढेकर, पं. मन्नुजी मृदंगाचार्य।

अलंकार द्वितीय वर्ष (क्रियात्मक)

पूर्णांक: 300, (क्रियात्मक 200 + प्रदर्शन 100)
न्यूनतम 155

(तबले के विद्यार्थी के लिए)

सूचना : संगीत अलंकार के अंतिम वर्ष की परीक्षा में स्वतंत्र वादन मुख्य विषय के रूप में तथा साथ संगत यह सहायक विषय होगा। विद्यार्थी को गायन, तंतुवाद्य तथा कथक नृत्य में से किसी एक विधा की संगति को चुनना होगा, जिसका उल्लेख विद्यार्थी अपने परीक्षा आवेदन प्रपत्र में करेंगे।

१) त्रिताल:-
   क) दिल्ली या फर्रुखाबाद घराने के पेशकार का विस्तृत वादन ।
   ख) एक खंड तथा एक मिश्र जाति का कायदा, छः पल्टो के साथ।
   ग) पूर्ण संकल्पित रचनाओं में से उठान, आमद, फरद टुकड़े, फरमाईशी चक्रदार, कमाली चक्रदार, मंझेदार गत, दर्जेदार गत के एक बजाना। एक उदाहरण को हाथ से ताली देकर बोलना तथा
   (ख) फर्रुखाबाद, लखनौ, बनारस तथा पंजाब इन घरानों की विशेषतायें प्रकट करने वाली गतों का वादन

२) अन्य ताल:-
   अ) मत (9 मात्रा), सद (11 मात्रा), जयताल (13 मात्रा) इन तालों में पेशकार (फरशबंदीयुक्त) तिस्र तथा चतुस्र जाति के दो कायदे, दो रेले, (छह पलटों के साथ) तथा कम से कम छह गत टुकड़े बजाना।

३) अपने वाद्य के अतिरिक्त किसी अन्य अवनध्द वाद्य की वादन पद्धति की जानकारी तथा वादन करने की क्षमता प्रदर्शित करना।

४) साथ संगत :
   सूचना : इस विषय के सभी विद्यार्थियों में तबला और तानपुरा स्वर में मिलाने की क्षमता होना अनिवार्य है।

   i. गायन की संगत:
      क) धूपरा, आहाचीलाल, तिलवाड़ा इन सालों में विलंबित लय में वजनदार तथा लयदार ठेका बजाना तथा इन ठेकों में ठेका भरी युक्त वादन और मुखड़े टुकड़े बजाकरसम पर आने की क्षमता।
      ख) मध्यलय में संगत करते समय विभिन्न आकर्षक मुखड़ों का प्रयोग करने की क्षमता।
      ग) उप-शास्त्रीय गायन की संगति में (दीपचंदी, कहरवा दादरा) गायन अनुरूप तालों के ठेके बजाने की क्षमता तथा कलात्मक एवम् सौंदर्यपूर्ण लगियों का प्रयोग ।

   ii. तंतुवाद्य की साथ
      क) त्रिताल, रूपक, झपताल तथा एकताल को द्रुत लय में तंतू वाद्य के अनुरूप बजाने की क्षमता।
      ख) विलंबित त्रिताल में मसीतखानी या अन्य प्रकार की गत के साथ अलग-अलग मात्रा से उठने वाली विविध दमयुक्त तिहाईयों को बजाने की क्षमता ।

ग) उपज अंग से साथ करने का प्रारंभिक ज्ञान ।
घ) 'नाधिं धिं को अतिद्रुत लय में विभिन्न निकास के साथ बजाने का अभ्यास ।

कत्थक नृत्य :

क) कत्थक नृत्य में प्रदर्शित की जाने वाली न्यूनतम पाँच बंदिशों की पढ़त करना तथा उनका तबले पर वादन करना।
ख) तीव्रा और सूलताल में न्यूनतम चार बंदिशों का थपियों बाज (पखावज अंग से) वादन करने की क्षमता ।
ग) कत्थक नृत्य के तत्कार की अनुरूप साध संगत एवम् द्रुत लय में अक्षरों के क्रम में परिवर्तन करते हुये न्यूनतम चार पल्टे बजाने की क्षमता।
घ) विभिन्न प्रकार की तिहाइयों का कत्थक नृत्य के अनुरूप वादन करने की क्षमता।
ङ) कत्थक नृत्य के 'रस–भाव' प्रदर्शन में उचित से प्रभावकारी साथसंगत

मंच प्रदर्शन : (आमंत्रित श्रोताओं के सम्मुख परीक्षा आयोजित की जाए)

अ) त्रिताल में सम्पूर्ण स्वतंत्र वादन 30 मिनिट
आ) परीक्षक के निर्देशानुसार निम्नलिखित में से किसी एक ताल में संपूर्ण एकल वादन, (न्यूनतम 20 मिनिट) रूपक, झपताल, एकताल, सवारी

अलंकार द्वितीय वर्ष- तबला

क्रियात्मक पूर्णांक 300, (मौखिक 200 + मंच प्रदर्शन- 100)
न्यूनतम 155

गुणपत्रिका :

क्रमांक	विवरण	अंक
1	त्रिताल में अभ्यासक्रमानुसार वादन	50
2	मत, रुद्र, जयताल इन तालों में पेशकार त्रिस्त्र तथा चतुख जाति के दो कायदे, दो रेले, तथा कमसे कम छह गत टुकड़े	50
3	अपने वाद्य के अतिरिक्त किसी अन्य अवनद्ध वाद्य की वादन पद्धति की जानकारी तथा वादन करने की क्षमता	20
4	तबला और तानपुरा स्वर में मिलाने की क्षमता	10
5	परीक्षक द्वारा पूछे गये बुद्धिनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर देना	20
6	सहायक विषय (संगति) के संबंधित विभिन्न प्रश्नों के उत्तर देना	50
	कुल अंक	**200**

मंच प्रदर्शन : (आमंत्रित श्रोताओं के सम्मुख)

क्रमांक	विवरण	अंक
अ)	त्रिताल में सम्पूर्ण स्वतंत्र वादन (न्यूनतम 30 मिनिट)	60
ब)	परीक्षक के निर्देशानुसार निम्नलिखित में से किसी एक ताल में सम्पूर्ण एकल वादन (न्यूनतम 20 मिनिट) रूपक, झपताल, एकताल, सवारी	40
	कुल अंक	**100**

अलंकार द्वितीय वर्ष

(पखावज के विद्यार्थी के लिए)
क्रियात्मक :

१) धमार, वसंत, गजझम्पा तथा फरदोस्त तालों में साथ परने, गत- परने, रेले तथा चक्रदार परनों का वादन करने की क्षमता।
२) उपर्युक्त तालों में 'चिननग' प्रस्तार विधि' 'दम युक्त तिहाईयों सहित बजाना
३) उपर्युक्त तालों में से किसी एक ताल में कुआड़ तथा संकीर्ण जाति के परनों का वादन करने की क्षमता।
४) पौन गुन, सवागुन, डेढगुन, पौनेदो गुन तथा ढाई गुन की लयकारिओं में एक-एक परन बजाना ।
५) समा, स्त्रोतावहा तथा गोपुच्छा यतियों की एक एक परन बजाना।
६) परीक्षक द्वारा दिये गये बोलों के आधार पर परन बनाने का अभ्यास।
७) अलग-अलग मात्राओं से प्रारंभ होनेवाली परने बजाने की क्षमता
८) सर्प-परन, कमाली चक्रदार तथा फर्माईशी चक्रदार बजाने का अभ्यास।
९) जयताल, लक्ष्मी, शिखर तथा अष्टमंगल तालों का संक्षिप्त अध्ययन।

मंच प्रदर्शन :-

१) धमार ताल में संपूर्ण अंगों सहित तैयारी युक्त एकल वादन (न्यूनतम 30 मिनिट) (ठेका विस्तार, साथ परन, गज परन, ताल परन, स्तुति परन, रेले आदि सभी प्रकारों का वादन अपेक्षित है।)
२) वसंत, रुद्र तथा गजझम्पा तालों में लगभग 15 मिनिट तक एकल वादन करने की क्षमता

अलंकार द्वितीय वर्ष (पखावज)

गुणपत्रिका :

#	विवरण	अंक
1	धमार, वसंत, गजझंपा, तथा फरदोस्त में वादन	60
2	चिननग का प्रस्तार तथा विविध तिहाइयाँ	20
3	कुआइ तथा संकीर्ण जाति के परने	20
4	विविध लयकारियों में परन	20
5	परने बनाना	20
6	विविध यतियों में परन बनाना	10
7	विविध मात्राओं से परने बजाना	15
8	सर्प-परन फरमाईशी और कमाली चक्रदार	15
9	तालों का संक्षिप्त अध्ययन	20
	कुल मौखिक अंक	**200**

मंच प्रदर्शन :

धमार में वादन (न्यूनतम ३० मिनिट) - 50 अंक
वसंत, रुद्र तथा गजझपा में वादन (न्यूनतम १५ मिनिट) 50 अंक

कुल अंक - 100 अंक

संदर्भ ग्रन्थों की सूची
(मध्यमा द्वितीय वर्ष तक)

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक
1	ताल परिचय (भाग १)	पं. गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव
2	तबला कौमुदी (भाग – १)	स्वामी पागलदास
3	तबला शास्त्र	श्री. मधुकर गणेश गोडबोले
4	ताल प्रसून	श्री. छोटेलाल मिश्र
5	तबल्याशी सुसंवाद (मराठी)	श्री. मुकुंदराज देव
6	ताल दर्शन मंजरी	श्री. राम नरेश राय
7	ताल बोध	श्री. कालीचरण गौड
8	ताल तरंग	श्री. टी. आर. शुक्ल
9	संगीत ताल परिचय (भाग १ एवं २)	डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग
10	तबला मार्गदर्शक परीक्षा तयारी भाग १ तथा २	श्री. वसंत लेले

(विशारद अंतिम तक)

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक
1	ताल दर्शन मंजरी (भाग २)	श्री. रामनरेश राय
2	तबला कौमुदी (भाग – २)	स्वामी पागलदास
3	ताल कुसुम	कुसुमजी
4	ताल परिचय (भाग – २)	श्री. गिरिशचन्द्र श्रीवास्तव
5	ताल प्रकाश	श्री. भगवतशरण शर्मा
6	ताल मार्तण्ड	श्री. सत्यनारायण वशिष्ठ
7	तबला अंक	संगीत कार्यलय, हाथरस
8	ताल विज्ञान	श्री. मोहनलाल जोशी

अलंकार हेतु

क्रमांक	पुस्तक का नाम	लेखक
1	तबला वादन शास्त्र और कला	पं. सुधीर माईणकर
2	ताल परिचय (भाग – ३)	पं. गिरिशचन्द्र श्रीवास्तव
3	ताल कोश	पं. गिरिशचन्द्र श्रीवास्तव
4	तबला (मराठी)	पं. अरविन्द मूलगांवकर
5	तबले का उद्गम विकास और वादन शैलियाँ	डॉ. योगमाया शुक्ला
6	तबला एवं पखावज वादन के घराने एवं परंपराएँ	डॉ. आबान मिस्त्री
7	भारतीय संगीत वाघ	डॉ. लालमणि मिश्र
8	भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन	डॉ. अरुणकुमार सैन
9	भारतीय संगीत में ताल छन्द और रूप विधान	डॉ. सुभद्रा चौधरी
10	संगीत संचयन	-
11	ताल दीपिका	मधुकर गणेश गोडबोले
12	पेशकार रंग	नारायण जोशी
13	Fundamentals of Raga and Tala With a new system of notation	Pt. Nikhil Ghosh
14	मृदंग अंक	संगीत कार्यालय हाथरस
15	तबला कौमुदी (भाग ३)	स्वामी पागलदास
16	ताल वाद्य शास्त्र	श्री. मनोहर भालचंद्र मराठे